Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 17/03/2020 Accepted on : 31/03/2020 Publication Date: 30/04/2020

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब: गुरुवाणी में पर्यावरण

ज्योति शर्मा
सहायक प्राध्यापिका, यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ टीचर्स ट्रेनिग एंड रिसर्च
चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली, भारत
Email – jems.sandy@gmail.com

सारांश : मनुष्य और पृथ्वी के बीच का संबंध जहां जितना जटिल है उतना जरूरी भी /हर दिन यहाँ प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जानवरों की प्रजातियों के विलुप्त होने का सामना करने की कहानियाँ सामने आ रही हैं /धर्म पर्यावरण और इसके प्रति हमारी जिम्मेंदारी पर विचार करने का उत्तरदायित्व भी हम पर ही है /सदियों से पंजाब में हर क्षेत्र ने अपना योगदान दिया /चूँकि देखा जाये तो पर्यावरण से सम्बन्धित मुहिम आज की नहीं है बल्कि हमारे गुरुओं ने हमें इससे सदियों पहले अवगत करा दिया था /उसी कारक के अंतर्गत मेरा यह शोध-पत्र पर्यावरण पर आधारित है जिसका शीर्षक है - "श्री गुरु ग्रंथ साहिब: गुरुवाणी में पर्यावरण"/

सूचक शब्द : ग्लोबल वार्मिंग, *Ecosophie*, *Oikos*, अस्सिसी |

१ प्रस्तावना:

भारत उन महापुरुषों की धरती है, जिन्होंने व्यक्ति की प्रथम सांस से लेकर अंतिम क्षण को विभिन्न-विभिन्न रूपों से सार्थक किया | उन के उपदेश, उन की शिक्षाएँ संसार के हर कोने को छू कर एक ही धुरी पर एकत्रित होती रही और वह था– मानव कल्याण | वह कल्याण चाहे बाहरी व्यक्तित्व का हो या आन्तिरिक व्यक्तित्व का | लेकिन हमारे उसी संसार में कुछ महापुरुष ऐसे भी हुए जिन्होंने कर्ता, कर्म के साथ-साथ करण को महत्त्व देते हुए कारक की सार्थकता का महत्त्व बताया | उसी कारक के अंतर्गत मेरा यह शोध-पत्र पर्यावरण पर आधारित है जिसका शीर्षक है- "श्री गुरु ग्रंथ साहिब: गुरुवाणी में पर्यावरण " | क्योंकि पंजाब मेरी मातृभूमि है और पंजाबी भाषा मेरी माँ-बोली | तो इन दो माताओं की विरासत के साथ-साथ जो संस्कृति, संस्कार और पर्यावरण रहा उस में एक और भाग रहा सर्वोच्च और सर्वोकृष्ट "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज हमारे गुरुओं, हमारे संतों की वाणी का |

मनुष्य और पृथ्वी के बीच का संबंध जहां जितना जटिल है उतना जरूरी भी | हर दिन यहाँ प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जानवरों की प्रजातियों के विलुप्त होने का सामना करने की कहानियाँ सामने आ रही हैं | धर्म पर्यावरण और इसके प्रति हमारी जिम्मेंदारी पर विचार करने का उत्तरदायित्व भी हम पर ही है | सदियों से पंजाब में हर क्षेत्र ने अपना योगदान दिया | चूँकि देखा जाये तो पर्यावरण से सम्बन्धित मुहिम आज की नहीं है बल्कि हमारे गुरुओं ने हमें इससे सदियों पहले अवगत करा दिया था | जिनमें हम श्री गुरु नानक देव जी जो सिक्ख धर्म के समर्थक के रूप में माने जाते हैं और श्री गुरु हर राय जी के साथ-साथ भगत पूरण सिंह का नाम इस मुहिम में बड़ी शान से आगे आया | अगले संतों ने भी इस पर अपने विचार व्यक्त किये | आज यदि हम पंजाब के गुरुओं और संतों की बात करें तो सिक्ख धर्म उनसे अछूता कैसे रह सकता था | वे मानवता और पर्यावरण के बीच के सम्बन्ध को लेकर बहुत चिंतित है | उनका यह मानना है कि वाहेगुरु ने इस दुनिया का सृजन एक ऐसी जगह के रूप में किया है जहाँ हर पेड़-पौधा और जानवर रह सके, ताकि हर जीवन को यह मौका प्राप्त हो कि वह यह साबित कर सके कि यह मुक्ति तक पहुँचने के लिए पर्याप्त साधन है |

समकालीन अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवादी टेक्नोक्रेटिक समाज अपने लाभ हितों के साथ जिस प्रकृति को नियंत्रित करने की तकनीकें और जीतने की महारत हासिल करने का दावा करता है, दुर्भाग्यवश वैश्विक जीवन के लिए एक बुनियाद खतरा पर्यावरण की समस्या के साथ जूझ रहा है | भ्रष्ट और अपवित्र करने वाली अहंकारी मानवशक्ति ने प्रकृति के चरण का आश्रय किया है जबकि प्रकृति ने जीवन देने के साथ-साथ मातृत्व, रक्षा, पौष्टिकता, लौकिक से अलौकिक दान दिया है | आदमी ने

अमरता के लिए प्रकृति पृथ्वी के जीवनमण्डल और वातावरण को घायल कर दिया है | धरती माँ जो जीवन दे रही है उस पर अपनी स्वार्थ की मोहर लगा कर स्वार्थी मनुष्य आत्मविनाश की ओर बढ़ रहा है | वनों की कटाई, ओज़ोन परत की कमी, ग्लोबल वार्मिंग आदि के रूप में इस संपत स्थिति का वर्णन वैज्ञानिक समुदाय कर रहे हैं | वहीँ पर एक शब्द Ecosophie जिसका शाब्दिक अर्थ "ब्रह्माण्ड का ज्ञान" अर्थात स्थायी और शांतिपूर्ण परिस्थितिकी को बढ़ावा देने के लिए जरुरी है | दो ग्रीक शब्दों का संयोजन Oikos+sophos के मेल से Ecosophie का जन्म हुआ | Oikos का मतलब है ब्रह्मांड | Ecosophie परिस्थितिक सद्भावना और संतुलन का एकदर्शन है | जो उस ज्ञान की तरह है जो कि प्रबल विरोधी दुनिया के विचारों उत्तेजक प्रकृति को जानने के तरीके हैं | यह ब्रह्माण्ड की समग्र चेतना की ओर जाने का एक प्रयास है | ये प्रकृति के साथ मानवता और समाज की एक नयी मध्यस्तता है | यह विकासशील प्राकृतिक-पर्यावरण-आध्यात्मिकता की दिशा में एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण रखता है |

१९८६, प्रकृति पर अस्सिसी(Assisi) घोषणाएं :

१९८६ में एचआरएच(HRH) प्रिंस फिलिप, और फिर अंतर्राष्ट्रीय डब्लूडब्लूएफ(WWF) के तत्कालिक राष्ट्रपति ने दुनिया के पाँच प्रमुख धर्मों- बौद्ध धर्म, ईसाई, हिन्दू, मुस्लिम और यहूदी धर्म के पाँच प्रमुख नेताओं को इस पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया था कि कैसे उनका धर्म प्राकृतिक दुनिया को बचाने में मदद कर सकता है | यह बैठक इटली के अस्सिसी(Assisi) में तय की गयी क्योंकि यह स्थान पारिस्थिकी के कैथोलिक संत, सेंट फ्रांसिसी का जन्म स्थान था | इस बैठक में पाँच धर्मों की अपनी विशिष्ट परम्परा और दृष्टिकोण की रूपरेखा से प्रकृति की देखभाल के लिए कुंजी बयान की गयी | इन्ही घोषणाओं में कुछ सिक्ख कथन भी रहे-पहला कथन यह है कि, देर पंद्रहवीं सदी में सिक्ख धर्म की शुरुवात के बाद, 'सृजन की एकता' पर आस्था बनाई गयी | सिक्ख धर्म का मानना है कि यह ब्रह्माण्ड सर्वशक्तिमान द्वारा बनाया गया है | वह खुद इस सृष्टि के हर रूप का निर्माता और मालिक है, प्रकृति के सभी रूपों और दुनिया के हर तत्व का जिम्मेदार है | सिक्ख धर्म बड़ी दृढ़ता से यह विश्वास करता है कि सभी बातों का जन्म, जीवन और मृत्यु का स्रोत भगवान है | दूसरी बात, सिक्ख धर्म यह सिखाता है कि प्राकृतिक वातावरण और सभी प्रकार के जीवन का अस्तित्व प्रकृति की लय से बारीकी से जुड़ा हुआ है | गुरुओं का इतिहास उनके प्यार और प्राकृतिक पर्यावरण- पशु, पक्षी, पेड़-पौधे, पृथ्वी और आकाश से विशेष सम्बन्ध की कहानियों से भरा हुआ है | यह एक बहुत मजबूत वनस्पति परंपरा भी है | अगला कथन यह है कि, यह इस कारण है कि सिक्ख धर्म उनकी निंदा करता है जो लोग शिकार करने, खाने और बलिदान की लालसा रखते हैं | सिक्ख भजनों में भगवान अक्सर सभी प्रकार के जीवन के प्रदाता के रूप में माना जाता है जिसे भगवान प्यार करता है और जो भगवान द्वारा प्यार किया गया है | भगवान हर आदमी और औरत में प्रकृति और सभी प्राणियों के प्रति करुणा और विश्वास रखने के लिए माता और पिता के रूप में गारंटी लेता है |

२ श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु हर राय जी: पर्यावरण सम्बन्धी शिक्षाएँ :

प्रकृति जिसे हम देखते हैं, प्रकृति जिसे हम सुनते हैं, प्रकृति जिसका हम खौफ खाते हैं, आश्चर्य और ख़ुशी के साथ निरिक्षण करते हैं, निचले क्षेत्र की प्रकृति, आसमान के प्रकृति, सारी सृष्टि में प्रकृति, प्रजातियों, प्रकार, रंग में प्रकृति, जीवन रूपों में प्रकृति, अच्छे कर्मों में प्रकृति, गर्व और अहंकार में प्रकृति, हवा, पानी और आग में प्रकृति, पृथ्वी की मिट्टी में प्रकृति, पूरी प्रकृति तुम्हारी है | हे शक्तिशाली प्रजापति, आप इसे आदेश देते हैं, इसका निरिक्षण करते हैं और आप इसी के भीतर व्याप्त हैं | (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब) ऐसे गुरुओं का जीवन प्रकृति के प्रति उनके प्रेम की कहानियों से भरा हुआ है |

सिक्ख भजन में वाहेगुरु को सभी जीवन का प्रदाता कहा जाता है | इंसानों की दुनिया और पर्यावरण की दुनिया के बीच कोई अंतर नहीं है | यह दोनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं और सम्मान से इनके साथ व्यव्हार करना चाहिए | गुरुओं ने बड़ी दृढ़ता से हमें पृथ्वी के प्रति हमारी जिम्मेदारी से अवगत कराया है | श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के द्वारा संतों का मानना है कि पर्यावरण को तभी बचाया जा सकता है जब वाहेगुरु द्वारा बनाये गये संतुलन के सृजन को बरकरार रखा जा सके |

श्री गुरु हर राय जी वे गुरु हैं जो कि सिक्ख इतिहास में प्रकृति के लिए उनकी गहरी संवेदनशीलता और इसके संरक्षण के लिए याद किये जाते हैं |७वें गुरु ने पंजाब की सहायक नदी सतलुज के तट पर किरतपुर साहिब को पार्क और उद्यानों के

शहर के रूप में विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है |उन्होंने पूरे क्षेत्र में फल और फूल के वृक्षों ,साथ ही औषधीय जड़ीबूटियाँ और वन्यजीव अभयारण्य लगवाए| सिख इतिहास के अनुसार उन्होंने पक्षियों और जानवरों को शहर की तरफ आकर्षित करने और इस जगह को सुखद जीवन जीने के लिए तब्दील करके एक स्वास्थ्यप्रद वातावरण बनाया है |

कई गुरुओं, संतों और महापुरुषों ने अपने सहयोग से पर्यावरण को माननीय जीवन के लिए औषधी मानते हुए बीमार, अपाहिज लोगों को उचित पर्यावरण प्रदान करते हुए अपने जीवन को न्यौंछावर कर दिया | प्रकृति का सम्बन्ध हमारे गुरुओं ने परिवार से जोड़ा, वहीँ दुर्भाग्यपूर्ण, बीमार, दु:खी, विकलांग और लाचार व्यक्ति उसी परिवार के द्वारा अकेले छोड़ दिए गये | कारण चाहे जो भी हो ,ज्यादातर समाज में ,बूढ़े और नवजात विकलांग शिशुओं की कोई देखभाल नहीं करना चाहता –यहाँ तक कि उनके जैविक माता-पिता भी | उन्हें यूँ ही सड़क के किनारे बिना किसी उचित देखभाल और इलाज के मरने के लिए छोड़ दिया जाता है | कोई भी रोगग्रस्त व्यक्तियों को छूना नहीं चाहता | वे सभी "समाज पर एक बोझ "माने जाते हैं और कोई भी उनकी देखभाल नहीं करना चाहता |तो कौन उनकी देखभाल करेगा ? ९५ साल पहले रामजी दास नाम का एक मसीहा जो कि बाद में' **भगत पूरण सिंह'** कहलाया इस धरती पर आया |उन्होंने एक आन्दोलन शुरू किया जो कि एक नई संकल्पना थी| यह कोई आसान काम नहीं था |चौदह साल उन्होंने एक अपांग बच्चे को अपने कंधे पर लेकर घुमाया क्योंकि उनके पास रहने का ठिकाना नहीं था |अगली बार उन्होंने एक ऐसी औरत की देखभाल की जिनकी टीबी से मृत्यु होने जा रही थी और जिनका बच्चा भी बाद में बीमारी की चपेट में आ गया |यह उनके नाम का दौर चल रहा था | उन्होंने अपने साथी मनुष्यों के प्रति प्यार होने से परमात्मा को प्राप्त कर लिया था | वे हमेशा उचित पर्यावरण की खोज में रहते थे |यात्रा कठिन और दर्दनाक थी |पर अकेले ही उन्होंने ,दिन और रात की मेहनत से ,भीषण गर्मी और काटती ठण्ड में ,बारिश ओर गरज में ,द्रोही से व्याकुल और आलोचना से निडर रहकर जहाँ से भी भगवान के बनाये मर रहे ,गंदे ,अतिदु:खी ,और संक्रमित कृतियाँ मिलती ,वे उन्हें ले आते | पिंगलवाड़ा एक संस्था नहीं है ,एक गतिशील आन्दोलन है | भगत जी ने कई पूर्व निर्धारित कार्यों को रुकने नहीं दिया :उन्होंने एक दर्शन प्रतिपादित किया जो कि पिंगलवाड़ा की नींव है और हमारे समाज की सामाजिक समस्याओं के पूरे स्पेक्ट्रम को शामिल करता है| उन्होंने भी गुरु नानक देव जी की वाणी को आधार बनाते हुए हर मनुष्य के लिए खुली हवा , स्वच्छ पानी ,उचित धूप और छाया को आधार बनाते हुए अपने पिंगलवाड़ा में ऐसे पर्यावरण का निर्माण किया |

३ प्रार्थनाएं :

गुरुवाणी जी में यह विचार हैं कि आत्मा और शरीर विरोधी नहीं हैं | गुरु नानक जी ने स्पष्ट किया था कि आत्मा ही एक वास्तविकता है और मानव शरीर इस आत्मा का ही एक रूप है | आत्मा कई रूप धारण करती है और विभिन्न स्थितियों के तहत उसे नाम देती है |

जब मैंने वास्तव में देखा, मुझे पता था कि सभी आदिम था | नानक, सूक्ष्म(आत्मा) और सकल(सामग्री) वास्तव में समान हैं | -
(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पृष्ठ-२८१)

कि जो व्यक्ति के अन्दर है, वही बाहर है और कोई सत्ता नहीं है; परमात्मा के द्वारा एक उत्साहित नजरें सभी अस्तित्व पर एक रूप में और अविभाजित, वही प्रकाश हर अस्तित्व पर प्रवेश करता है |

श्लोक १
हर समय गोपियाँ गोपाल दिखते हैं||
गहने पहन कर पानी बैसंतरु चाँद सूरज अवतार||
पूरी धरती माल धन वर्तनी सरब जंजाल||
नानक मुसे ज्ञान विहुनी खायी गयी जमकाल||१||

हर क्षण निर्माता अपनी सृजना में अगणित प्राणियों को जोड़ता है | हवा, जल, पानी, पृथ्वी और चाँद इसके गहने हैं | दुनिया लगातार सांसारिक धन और सम्बन्धों में खुद को व्यस्त कर बेकार कर रही है, बिना निर्माता और उनकी रचना से प्यारे सम्बन्ध के जीवन बर्बाद है | यहाँ पर भी पर्यावरण (हवा, जल, पृथ्वी, चाँद इत्यादि) के आश्रय से मानीय सम्बन्ध साक्षात दर्शन होते हैं | **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब-पेज ४६५)**

श्लोक २
पवन गुरु पानी माता माता धरती महत||
दिवस राती दुई दाई दैया खेले सकल जगत||
चंगीयाइयाँ बुराइयाँ वाचे धरम हदुर||

कर्मी आपे आपणी के नेड़े के दूर||
जनी नाम दियाए गये मस्कत खाली||
नानक ते मुख उजले केटी छुटी नाली||१||

हवा गुरु, पानी पिता है, और पृथ्वी सभी की महान माँ है | दिन और रात दो दाई माँ(जो बच्चे को जन्म देने में सहायता करती है) हैं, जिनकी गोद में सारा संसार खेलता है | अच्छे कर्म और बुरे कर्म का कच्चा-चिट्ठा धर्म के भगवान के सामने पढ़ा जाता है | अपने कर्मों के अनुसार कुछ तो पास चले आते हैं और कुछ दूर ही संचालन कर लेते हैं | हे नानक जिन्होंने भगवान और उनकी रचनाओं के संघ से दुनिया से रवानगी ली, उनके चेहरे भगवान के न्यायालय में चमक रहे हैं और वे केवल अपनी मौजूदगी और आनंद से दुनिया को आशीर्वाद दे सकते हैं | **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज-८)** | यहाँ श्री गुरु नानक देव जी ने पवन को गुरु के रूप में, पानी को पिता के रूप में, और पृथ्वी को माँ के रूप में तथा दिन-रात को दाई माँ के रूप में मनुष्य से सम्बन्ध जोड़ते हुए प्रकृति अर्थात पर्यावरण की अहमियत बताई है |

श्लोक ३
आपे दाना आपे बीना||
आपे आप उपाय पतीना||
आपे पौन पायी बैसंतर अपे मेल मिलायी है||३||
आप ससि सूरा पूरे पुरा||
आपे ज्ञान ध्यान गुरु सुरा||
काल जाल जम जोर न साके सचे सियो लिव लायी है||४||
आपे भावर ढल भाल तरुवर||
आपे जल थल सागर सरोवर||
आपे मच्छ कच्छ करनीकर तेरा रूप न लबणा जाये है||६||
पौन गुरु पानी पित जाता||
उधर संजोगी धरती माता||
रैन दिनस दुई दाई दाईयाँ जग खेले खेल खिलाई है||१०||

ये दुनिया हर रचना की तरह, भगवान की एक मिसाल है | इस दुनिया में हर जीव, हर संयंत्र, हर रूप विधाता की एक मिसाल है | प्रत्येक भगवान का हिस्सा है और भगवान सृष्टि के प्रत्येक तत्व में विराजमान हैं | भगवान हर अस्तित्व के बीच का प्राथमिक सम्बन्ध और सभी का कारण है | निर्माता ने खुद को बनाया और सृष्टि की हर रचना में वास करता है | स्वयं खुद ही कारिन्दा मधुमक्खी, फल, फूल और पेड़ हैं | स्वयं खुद ही पानी, रेगिस्तान, समुद्र और तालाब हैं | स्वयं ही बड़ी मछली, कछुआ और कारणों के कारण हैं | उनके रूप को कोई नहीं जान सकता| **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज १०१६)**

४ जलवायु परिवर्तन पर गुरुओं के विचार :

निर्माता ने खुद को बनाया और सृष्टि की हर रचना में वास करता है | आप खुद ही कारिन्दा मधुमक्खी, फल, फूल और पेड़ हैं | आप खुद ही पानी, रेगिस्तान, समुद्र और तालाब हैं | आप खुद ही बड़ी मछली, कछुआ और कारणों के कारण हैं | आपके रूप को कोई नहीं जान सकता | (श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज १०१६) हमारे पहले गुरु, गुरु नानक देव जी के अनुसार, हम इंसानों ने अपने चारों और दुनिया बनायी हुई है वह हमारे भीतर की दशा का प्रतिबिम्ब है | जैसे कि हम अपने चारों ओर की अपव्ययी और प्रदूषित प्रथाओं को देखते हैं, हम अपनी अंतर्दृष्टि से अपने भीतर अराजकता पाते हैं | जब दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने १६९९ में खालसा की स्थापना की, उन्होंने सिक्खों को आदेश दिया कि जो भी ताकत दूसरों की भलाई में संकट उत्पन्न करे, उसका सामना किया जाये | उन्होंने हमें इस जिम्मेदारी के साथ योद्धा बनाया कि हम कमजोरों की रक्षा कर सकें | आज धरती, जलवायु परिवर्तन की चपेट में हैं क्योंकि हम इंसानों ने अपने वातावरण को, अपने पर्यावरण को संरक्षित नहीं किया | आज यह करने और दिखाने का सही समय है कि हम खालसा के सच्चे योद्धा हैं | हमें पृथ्वी के साथ सुधार करना चाहिए | हमारी

धरती माता, इंसानों के हाथों द्वारा कई निर्विवाद परिवर्तनों से गुजर रही है | यह बहुतायत ही स्पष्ट है कि हमारे कार्यों से पर्यावरण का बहुत नुक्सान हुआ है और यदि इसे अछूता ही छोड़ दें तो अधिक नुक्सान का अनुमान लगाया गया है | 1980 के बाद से, पृथ्वी की सतह का औसत तापमान काफी बढ़ गया है | ग्लेशियर और आर्कटिक में बर्फ पिघल रही है, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है- जो सबसे पहले पेड़-पौधे और जानवरों की प्रजातियों को डरा रहा है और गरीब लोगों को चोट पहुँचा रहा है | यहाँ हमें अपने गुरुओं की वाणी को याद रखने की आवश्यकता है | हम पर अपने गुरुओं की शिक्षाओं का पालन करने और कमजोरों की मदद करने की जिम्मेदारी है | सरकार ने पर्यावण में ग्रीन हाउस गैसों और कार्बन डाइऑक्साइड के अधिक उपयोग के प्रयोग और उस पर धीरे-धीरे नियंत्रण पाने और आम की सहमति के लिए बहुत प्रयास किये | जैसे जलवायु परिवर्तन और हमारे अल्हड़ अभ्यास दुनिया में खाद्य और पर्यावरण सुरक्षा पर निरंतर खतरा जारी कर रहा है, वैसे इस पर्यावरण मुद्दे को सरकार को सुरक्षा चिंताओं के केंद्र में रखना चाहिए | सरकार ऐसा करेगी, हमें सिर्फ यह आशा ही नहीं करनी चाहिए; हमें अपनी सरकार से कार्य करने पर बल देने की पहल करनी चाहिए | हमारे गुरु परिवर्तन के पहला-धावक होना चाहिए | सेवा, नि:स्वार्थ सेवा करने का अभ्यास, गुरु धर्म का एक मुख्य सिद्धांत है | हमारे गुरुओं ने भी '**गुरु घर**' से इसकी शुरुवात की थी तो हमारे धार्मिक स्थान एक प्रकाशस्तम्भ धर्मी सोच के रूप में, पर्यावरण के अनुकूल होने चाहिए | हमारे धार्मिक स्थानों, जब प्रकृति के साथ सद्भावना होगी तब वाहेगुरु, सभी के निर्माता से अधिक आध्यात्मिकता से जुड़ने की अनुमति देंगे | प्रकृति के प्रति सम्मान सिक्ख धर्म में पहले से ही है | जैसा कि गुरु नानक देव जी ने कहा ही है: ***पवन गुरु पानी पिता महत धरत महत*** (हवा गुरु, पानी पिता है, और पृथ्वी सभी की महान माँ है)| यदि हम अब कार्य करेंगे तो हम अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए हमारे पर्यावरण, जल संसाधन, धरती को सुरक्षित रख सकते हैं | आंतरिक शांति प्राप्त करने के लिए हम जिस वातावरण में रहते हैं, पहले उस पर ध्यान देना होगा |

५ सिक्ख धर्म में पर्यावरण शास्त्र :

दुनिया बनाते समय भगवान ने इस धरती को "आध्यात्मिकता का अभ्यास करने वाली एक जगह बना दिया है" | (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पेज 1035) सिक्ख शास्त्र यह घोषणा करता है कि मनुष्यों का उद्देश्य एक आनंदित राज्य और पृथ्वी और सभी रचनाओं के साथ सद्भाव प्राप्त करना है | हालाँकि यह लगता है कि मनुष्य आदर्शों से दूर चले गये हैं | पृथ्वी आज समस्याओं से संतृप्त है | यह उसके निवासियों और उनके भविष्य पर पीड़ादायक है | यह उस संकट में है जिसमें पहले कभी नहीं था | इसके जंगलो को निरावृत किया जा रहा है | एक शक्की धुंध दुनिया के शहरों को ढक रही है | इसकी झीलें और नदियाँ शहरी और औद्योगिक प्रदूषण से भरी जा रही हैं जो कि जलीय जीवन की हत्या कर रहा है | मनुष्य मनुष्य का शोषण कर रहा है | दुनिया के सभी हिस्से, जातीय, धार्मिक और राष्ट्रीय सीमाओं के पार अतिआवश्यकता की भावना है | राष्ट्रीय आर्थिक विकास और व्यक्तिगत जरूरतें और इच्छाओं की मांगे प्राकृतिक संसाधनों को घटा रही हैं |यह एक गंभीर चिंता का विषय है कि पृथ्वी अब ज्यादा देर एक स्थायी जैव प्रणाली नहीं रहेगी | पृथ्वी को सामान्य न्याय संकट और पर्यावरण संकट जैसे दो प्रमुख संकटों का सामना करना पड़ रहा है जो पृथ्वी को एक साथ एक विनाशकारी स्थिति की और ले जा रहे हैं | सामाजिक न्याय संकट में मनुष्य मानवता के टक्कर ले रहा है और पर्यावरण संकट में मानवता प्रकृति से टक्कर ले रहा है |सामाजिक न्याय संकट है कि गरीबी, भूख, बीमारी शोषण और अन्याय व्यापक हो रहे हैं | संसाधनों और व्यापारों पर आर्थिक युद्ध हो रहे हैं | गरीबों और सीमान्त के अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है | आधी दुनिया की आबादी का गठन का करने वाली महिलाओं को जनता के निर्णय लेने से बाहर कर दिया है जो कि उन्हें संकट और संघर्ष की घड़ी में और कमजोर बना रहा है | पर्यावरण संकट प्रकृति की मानवता के शोषण की वजह से हुआ जो अक्षय संसाधनों की कमी, कृषि और बस्ती की भूमि का अधिक उपयोग, वनों के विनाश आदि के लिए अग्रणी है | आज प्रदूषण हवा, पानी और जमीन को प्रदूषित कर रहा है | उद्योगों, घरों और वाहनों का धुँआ हवा में समा रहा है | औद्योगिक अपशिष्ट और उपभोक्ता कचरा, धाराओं और नदियों, तालाबों और झीलों को प्रदूषित कर रहा है | ज्यादातर कचरा आधुनिक प्रौद्योगिकी का एक उत्पाद है | यह जैव साध सकने और फिर से प्रयोग करने योग्य नहीं है और इसके दीर्घकालिक परिणाम भी अज्ञात हैं | कई पौधों और पशुओं की प्रजातियाँ, संभवतः मानव प्रजाति खुद दांव पर है

| इस संकट में तत्काल समाधान की जरुरत है | इस संकट में ब्रह्माण्ड में मनुष्य के प्रयोजन के बुनियादी सवाल पर जाने और स्वयं और ईश्वरीय निर्माण को समझने की आवश्यकता है | हम सभी को गुरुनानक देव जी के उस दर्शन को जानने की आवश्यकता है जिस विश्व समाज में भगवान के प्रति जागरूक मनुष्य हैं और जिन्होंने भगवान को जान लिया है | इन आध्यात्मिक प्राणियों के लिए ब्रह्माण्ड और पृथ्वी पवित्र हैं; सभी के जीवन में एकता है और उन सभी का मिशन अध्यात्म है | गुरु नानक देव जी ने देर पंद्रहवीं सदी में सिक्ख धर्म की नींव रखी | श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरु नानक देव जी का लेखन, जिन मानव गुरुओं ने आगे जा कर उनकी शिक्षा को बढ़ाया, और अन्य आध्यात्मिक नेताओं के शास्त्र शामिल किये गये हैं | गुरु नानक देव जी ने अपने दर्शन में कहा है कि मनुष्य जो वास्तविकता अपने चारों ओर बनाता है वह उसका प्रतिबिम्ब होता है | पृथ्वी की प्राकृतिक व्यवस्था की वर्तमान अस्थिरता-मनुष्य का बाहरी पर्यावरण उसके भीतर की अस्थिरता और दर्द का प्रतिबिम्ब है | पृथ्वी के भाग की बढती दरिद्रता मनुष्य के भीतर के खालीपन का प्रतिबिम्ब है | हमारी दुनिया की समस्याओं का हल प्रार्थनाओं और भगवान के हुकुम को स्वीकार करने में निहीत है | हुकुम एक ऐसी ही अवधारणा है- इसे सबसे अच्छा भगवान की इच्छा, आदेश या प्रणाली के संयोजन के रूप में वर्णित किया जा सकता है | विनम्रता के रवैय्ये और दिव्य आत्मा के समर्पण के साथ, एक ईमानदार मनुष्य मौजूदा पर्यावरण और सामाजिक न्याय संकट को दूर करने के लिए तलाश कर सकता है | सिक्ख तरीके से यह गुरु जो पूर्णता दिव्य ज्ञान है, उनके मार्गदर्शन के माध्यम से हो सकता है | एक **सिक्ख धर्मशास्त्री, कपूर सिंह** ने अपनी शिक्षाओं में बताते हुए कहा है कि सिक्ख धर्म में तीन तत्व निहीत हैं - एक, यहाँ आत्मा और समग्र के बीच कोई आवश्यक द्वंद्व नहीं है | दूसरा, मनुष्य में होशपूर्वक आध्यात्मिक प्रगति की प्रक्रिया में भाग लेने की क्षमता है | आध्यात्मिक प्रगति का उच्चतम लक्ष्य पृथ्वी के प्रति सचेत रहकर, भगवान के साथ सद्भाव रखना है, ताकि इस दुनिया को ही एक अध्यात्मिक विमान में तबदील किया जा सके |

६ पर्यावरण और आध्यात्मिकता :

भगवान के दिव्य विचार के अलावा सिक्ख धर्म में, भगवान के **आसन प्रकृति** पर जोर दिया है | गुरु अर्जुन देव जी ने स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन के निवास को लेकर **योगासन** की बात कही है | सिक्ख धर्म में भगवान एक "जीवित सत्य" है जो ब्रह्माण्ड का निर्माता और पालनहार है | वह इक-ओं-कार है, अर्थात भगवान समय और इतिहास के आयाम में एक निर्धारित रूप में स्वयं को प्रकट करता है | वह प्रकट सामग्री की वास्तविकता है | उन्हें प्रजापति व्यक्ति के रूप में(कर्ता पुरख) होने की कल्पना की है | वह ब्रह्माण्डीय रूप में(मूरत) अंतर्निहीत है | सिक्ख धर्म के मुताबिक, भगवान का निर्माण कार्य कभी न ख़त्म होने वाली प्रक्रिया है, कि वह सतत जीवन देने का सिद्धांत है | वह सृजना करता है, उत्साहित करता है और प्रकृति को बनाये रखता है | प्रकृति ईश्वर का निवास स्थान है, और इसीलिए प्रकृति पर श्रद्धा की बहुत जरुरत है | श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में कहा है:

वह निर्माता, स्वयं दुनिया बनाता.. और सब देखता है.. वह अकेले ही समझ प्रदान करता है | **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७६७)**

यह कहा जाता है कि भगवन रिक्त-स्थान और अंतर-रिक्त स्थान में निहीत है | वह सभी प्राणियों का पालन-पोषण करता है **(गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज, ७६०)** | भगवान ने इस दुनिया को स्वर की समता में नृत्य करने का अखाडा बनाया हुआ है **(गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७४६)** | वह सभी के बीच रहकर पालन करता है **(गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७४८)** | भक्त प्रभु से प्रसन्न रहता है और उसे, जल, वायु, जमीन, आकाश आदि में देखता है**(गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७४८)** | भगवान जिसने रचना की है, वही रचना को सम्भालता है | हे परोपकारी, तू सब को सहारा देता है **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७५१)** | ऐसे असंख्य ग्रन्थ हैं जो गुरु धर्म के मन को दर्शाते है, कि भगवान लौकिक गठन का स्रोत है, वही सब में उजागर है, और इसलिए, प्रकृति महज एक वस्तु नहीं है जिसे मानव के अंतिम छोर तक उपयोग किया जाये, लेकिन इसकी आंतरिक गरिमा और महत्व है | आत्म-अभिमानी होने से, मानव मन, प्रकृति के ऐक्य और अंत में रचनाकार का साथ खो देता है | यही उसके दुःख का कारण है और इसी का सिक्ख धर्म दावा भी करता है: आत्म दंभ(वर्चस्व) का चोर घर लूट रहा है और अब उसे आराम करने की जगह नहीं

मिल रही **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७५२)** | भगवान और उसकी रचना में उसकी उपस्थिति की पुष्टि करते हुए सिक्ख धर्म यह मानता है कि प्रकृति का पूरा विषय आत्म-धर्म की भावना है |

७ विश्व सोच :

दुनिया द्वारा इनकार किये गये दर्शन को प्रोत्साहित करने के विपरीत, गुरु संत परंपरा ने दुनिया/शरीर की वास्तविकता/प्रमाणिकता की पुष्टि की है | शरीर भगवान की प्राप्ति के लिए एक मध्यस्थता है | पृथ्वी और 'यहाँ और अब' जीवन की मुक्ति के लिए एक स्थान है: द्वंद्व में मनोरंजन हमें आवास करने वाले भगवान की तरफ ले जाता है **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७५७)** | शरीर में अमूल्य धन और भगवान की मध्यस्थता का लबालब खजाना है | शरीर के भीतर सभी महाद्वीपों, दुनिया और जमीन का पालन होता है | शरीर में वह परोपकारी भगवान बसता है जो दुनिया का जीवन और सबका पालन-पोषण करता है | शरीर को दुल्हन कहता है.. नाम का ध्यान करता है | **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज ७५४)** इस प्रकार, सिक्ख धर्म में, शरीर प्रतीकात्मक रूप से, पृथ्वी प्रकृति, ब्रह्माण्ड, (दुल्हे) के माध्यम से (शांति) भगवान की प्राप्ति संभव है | सिक्ख धर्म में, इसके सद्भाव और एकता की निरंतर चेतना के लिए पृथ्वी को देवी के रूप में प्रतिज्ञान करने को कहता है | जरूरतों और लालचों के आधार पर पृथ्वी का सेवन नहीं किया जा सकता, परन्तु संरक्षित किया जा सकता है | (निर्माण) के बीच में, उन्होंने पृथ्वी को धार्मिक कार्यवाही की जगह बनाने के लिए चुना **(जपुजी: गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज-7)** | सिक्ख मान्यता के अनुसार दुनिया पवित्र है, और इसके साथ सम्बन्ध भी पवित्र होने चाहिए | पूरी दुनिया पवित्र है. इसकी पवित्रता आप में अवशोषित रहे | अहंकार को त्याग कर भगवान की चौखट में स्वीकृति मिल सकती है **(श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पेज १४२)** | पृथ्वी का धर्म और पवित्रता के लिए चित्रण करके गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हम लोग सामान्यता और न्याय के साथ सम्बन्धित हैं | इसके आध्यात्मिक अर्थ के लिए, प्रकृति के इतिहास के भविष्य की सम्भावना है | गुरु-धर्म मन के लिए दुनिया की "वास्तविकता" के वेदांत का इंकार संयुक्त-राष्ट्र ईश्वरीय मन के लिए और अपर्याप्त है |

८ प्रदूषण(अछूत) का सिद्धांत :

प्रदूषण(अछूत) का सिद्धांत- (पर्यावरण प्रदूषण-जल, वायु, आदि को दर्शाता है) | लेकिन पारिस्थितिकी प्रदूषण भेद-भाव के सभी रूपों को दर्शाता है | गुरु नानक जी कहते हैं: "जाति खोखली है, प्रसिद्धि खोखली है, और एक मुक्तिदाता सबकी सुरक्षा करता है | उन्होंने जाति ग्रसित भारतीय मन को इसका अभ्यास न करने की सलाह दी- जिसे जाति और इसके व्यवहार पर घमंड है, वही दूसरों के लिए प्रदूषण का कारण बनता है | गुरुओं के अनुसार, प्रदूषण का स्रोत आत्म-केन्द्रित है, जो मनुष्य(हउमै) के मन में स्थित है | जीवन की मुक्ति में समाग्रता है, यह झूठि चेतना और असमान सामाजिक संरचना है | गुरु या गुरमुख से तात्पर्य है कि, गुरु(मुक्तियुक्त) भगवान की मौलिक एकता के द्वारा अन्य कृतियों और अम्ब्रियों के साथ एहसास किया हुआ व्यक्ति | वह पारिस्थितिक सद्भाव को लौकिक-भगवान के बारे में होश में रहकर बढाने का प्रयास करता है | वह एक सच्चा योगी है, जो हर रचना से समान रूप से व्यहार करता है, इसलिए सिक्ख धर्म में **तप** का हतोत्साहन किया जाता है, क्योंकि रोजमर्रा की जिन्दगी से अलग होना पलायनवाद, पृथ्वी/दुनिया से इनकार है, जिसका हर्जाना भगवान जिसने इंसान को बनाया है से अलगाव है | उसका ईश्वर के प्रति समर्पण ही, सभी प्राणियों की खुशहाली के प्रति समर्पण है | आज विचारशीलता की जरुरत है, वो विचारशीलता जो हुम्मारे गुरु-साहिबनों नेहुमें बरसों पहले समझाने का प्रयत्न किया था | उन्होंने मानवीय जीवन के सुधार हेतु पर्यावरण की जो अहमियत सदियों पहले ही बता दी थी, आज उस पर अम्ल करने का वक़्त है | पर्यावरण से हमारा सम्बन्ध सिर्फ स्वार्थ-पूर्ति का नहीं बल्कि ऐसा अटूट रिश्ता है, जिस का रूप माता-पिता-गुरु की तरह है |हमारे गुरुओं ने हमें बताया है कि जो प्रकृति जो पर्यावरण हमें पालता है पुष्ट बनता है उस की भी हमें कद्र करनी चाहिए |

कुछ देशों में, कुछ सिक्ख भाइयों ने गुरुओं की इस प्रथा को कायम रखा है, जिसका साक्षात् उदाहरण है Sikh Environment Day,

- जिसके चलते अप्रैल २०१० में श्री हरिमंदिर साहिब को सोलर एनर्जी प्रोत करने की घोषणा हुयी |

- US में पहला गुरुद्वारा, गुरुद्वारा साहिब Fremont भी सोलर एनर्जी से प्रोत है |
- लंगर के लिए वह खुद सब्जियाँ और फल उगा रहा है |
- स्टेनलैस स्टील प्लेटों का प्रयोग कर रहें | इत्यादि

९ उपसंहार:

इस के अतिरिक्त गुरु हर राय जी के गुरुगद्दी दिवस पर एक पौधा लगाने की घोषणा भी श्री अकाल तख़्त साहिब में हुई | शिरोमणि गुरुद्वारा संबंधक कमेटी ने सभी गुरुद्वारों में पर्यावरण दिवस को केंद्र बनाते हुए कथा, कीर्तन करने का बीड़ा उठाया | आदि ऐसे बहुत मनुष्य हैं, जो जागरूक हैं हमारे गुरुओं की वाणी से और उसे जीवन में उतारने को प्रयत्नरत्त है | केवल कुछ यह एक संघर्ष नहीं है बल्कि हमें गुरुओं की शिक्षाओं को रूप प्रदान करना है | इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि यह कार्य भी हमारी भलाई के लिए ही होगा, जो पीढ़ी डर पीढ़ी चलेगा और हमारी पीढ़ियाँ पवन गुरु, पानी पिता, माता धरती और दिन-रात दो दाई माँ की गोद में चैन से खेल सकेंगीं |

सन्दर्भ:

1. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब (SGGS)
2. Pro. Gurbachan Singh Talib, Selections from the holy Granth.
3. Wazir Singh, The Philosophy of Sikh Religion.
4. www.punjabialochna.com
5. मध्यकालीन धर्मसाधना, हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्यभवन लिमिटेड, इलाहाबाद, प्र. सं. 1952.
6. मध्यकालीन हिंदी संत विचार और साधना, केशनी प्रसाद चौरसिया हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, प्र. सं. 1965.
7. मध्यकालीन संत साहित्य, राम खेलावन पाण्डेय, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, 1965.
8. उत्तरी भारत की संत परम्परा, परशुराम चतुर्वेदी, भारती भण्डार, प्रयाग, 1952.
9. संतों का धार्मिक विश्वास, धर्मपाल मैनी, नवजोत पब्लिकेशन, पंजाब.
10. संत कवि धारा, डॉ. धीरेन्द्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, 1954.
11. संत साहित्य की भूमिका, राजबली पाण्डेय तथा अन्य |
12. संत साहित्य, राधेश्याम दुबे |
13. कुछ होर धार्मिक लेख, साहिब सिंह, लाहौर बुक शॉप, प्र. सं. 1996.
14. गुरमत निरणय, भाई जोध सिंह मैसर्स अतरचंद कपूर एंड संस, अनारकली, लाहौर, छठा संस्करण, 1945 ई.
15. गुरमत फिलासफी, ज्ञानी प्रताप सिंह सिक्ख प्रकाशन हाउस, अमृतसर दूसरा स., 1947.
16. गुरमुखी लिपि दा जन्म ते विकास, जी.बी. सिंह, पंजाब युनिवर्सिटी, पंजाब 1959.
17. गुरुग्रन्थ दिवाकर, भाई कान्ह सिंह
18. A critical study of Adi Granth, Surinder Singh Kohli Delhi University, 1958. Writers Cooperative Industrial Society, New Delhi.
19. A History of the Sikh, J.D. Canningham,(New and Revised Edition)Oxford University Press 1918.
20. An Introduction of Punjabi Literature, Dr. Mohan Singh, Nanak Singh, Pustak Mala, Amritsar.